राष्ट्रमंडल देशों की संसदों के अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों के 25वें सम्मेलन के दौरान भारतवंशियों को संबोधन

.....

06 से **10 जनवरी, 2020**

टोरन्टो, कनाडा

.....

इस अवसर पर आपके बीच उपस्थित होना मेरे लिए बहुत खुशी और सम्मान की बात है। सबसे पहले, मैं आप सभी को नववर्ष की शुभकामनाएं देता हूं और आप सभी के साथ मुलाकात करने की व्यवस्था करने के लिए कार्यवाहक उच्चायुक्त श्री अंशुमान गौड़, टोरंटो में हमारी काउंसल जनरल, श्रीमती अपूर्वा श्रीवास्तव और उनके सहयोगियों को भी धन्यवाद देता हूं। मैं इस मुलाकात के लिए यहां उपस्थित भारतीय समुदाय के सभी विशिष्ट सदस्यों को धन्यवाद देता हूं।

टोरन्टो वास्तव में उत्तरी अमेरिका का एक ऐसा शहर है जो अप्रवासियों के लिए सबसे अधिक अनुकूल है। ग्रेटर टोरंटो क्षेत्र में भारतीय समुदाय के सबसे अधिक अर्थात छह लाख व्यक्ति रहते हैं। यहां भारत की अलग-अलग संस्कृतियों के लोग रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि यहां अपने भारतीय मूल के लोगों से मुलाकात होने की बहुत संभावना होती है, जिससे मुझे ऐसा लगता है कि मैं भारत में ही हूं।

मित्रो, भारत-कनाडा के बीच एक रणनीतिक साझेदारी है और दोनों ही देश की लोकतांत्रिक और बहुलतावादी मूल्यों में आस्था है। भारत और कनाडा अंतर्राष्ट्रीय मंचों, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र, राष्ट्रमंडल और जी-20 पर एक दूसरे को सहयोग देते हैं। अपनी विशेष पहचान रखने वाले हमारे दोनों लोकतांत्रिक देशों को अपनी राजनैतिक व्यवस्था के सफल कार्यकरण पर गर्व है। दोनों देशों में संसदीय शासन प्रणाली है और लोकतंत्र तथा विधि के शासन में हमारा साझा विश्वास हमारी घनिष्ठ भागीदारी का आधार है। विश्व के बदलते माहौल और हमारे संबंधित क्षेत्रों में बदल रही स्थितियों के चलते हमारे द्विपक्षीय संबंधों को और भी मजबूती प्रदान की जा सकती है।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने अप्रैल, 2015 में कनाडा की ऐतिहासिक द्विपक्षीय यात्रा की थी, जिसने हमारे द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊंचाई प्रदान कर इन्हें रणनीतिक भागीदारी में बदल दिया। उन्होंने कनाडा के राजनीतिक, व्यावसायिक और शिक्षा के क्षेत्र में जुड़े नेताओं के साथ गहन वार्ताएं कीं और 16 अप्रैल, 2015 को टोरन्टो में लगभग दस हजार भारतीय मूल के लोगों तथा भारत के साथ मैत्रीभाव रखने वाले लोगों को संबोधित किया। कनाडा के प्रधानमंत्री, श्री जस्टिन ट्रूडो ने भी फरवरी, 2018 में भारत की राजकीय यात्रा की थी। हमारे दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध हमारे द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत और कनाडा के लिए व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते तथा द्विपक्षीय निवेश प्रोत्साहन और भागीदारी समझौते पर चर्चा चल रही है।

मित्रो, भारत की गिनती ऐसे कुछ देशों में होती है जो उदार होने के साथ ही बहुत मजबूत भी हैं। इसका कारण भारतीय उपमहाद्वीप से धर्म और आध्यात्मिकता का प्रसार होना अथवा पुराने समय में आसपास के क्षेत्रों में भारत की संस्कृति का फैलाव होना है। फिर भी, इस उदार किन्तु ताकतवर देश का सबसे महत्वपूर्ण अंग इसके अप्रवासी लोग हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि दुनिया में सबसे ज्यादा अप्रवासी भारत से हैं और भारतीय मूल के लगभग 18 मिलियन लोग दुनिया के अलग-अलग देशों में रह रहे हैं। बड़ी संख्या में विदेशों में रह रहे भारतीय भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा देश को भेजते हैं जिससे देश को बहुत लाभ होता है। विदेशों से प्राप्त 79 बिलियन डॉलर की विदेशी मुद्रा देश के विकास में सहायता प्रदान करके हमारी अर्थव्यवस्था में अपना बहुमूल्य योगदान देती है। अप्रवासी भारतीयों के साथ संबंधों को मजबूत बनाने से तेजी से विकसित हो रही प्रौद्योगिकी और अप्रवासी भारतीय राजनय के क्षेत्र में एक स्थायी और लंबे समय तक लाभ होगा क्योंकि ये लोग अपने मूल देश और अपने प्रवास के देशों के बीच एक संपर्क का कार्य करते हैं।

मित्रो, विश्व में सबसे अधिक अप्रवासी भारतीय कनाडा में रहते हैं और वर्ष 2016 में इनकी संख्या लगभग 1.6 मिलियन थी जो कनाडा की कुल जनसंख्या का 3% से भी अधिक है। कनाडा के प्रत्येक शहर और प्रांत में भारतीय मूल के लोग रहते हैं। चीन और फिलीपींस मूल के नागरिकों के बाद देश में यह तीसरा सबसे बड़ा गैर यूरोपीय अप्रवासी समूह है। यह कनाडा का सबसे प्रमुख और पूरी तरह संगठित समुदाय है। यह प्रशंसा की बात है कि इंडो-कनाडाई लोगों ने अनेक क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ी है क्योंकि उनके पास सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान और चिकित्सा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों का पर्याप्त अनुभव है। भारतीय समुदाय के मजबूत सहायता नेटवर्क के साथ-साथ इस कौशल का यह अर्थ है कि ये लोग जहां रह रहे हैं, उस देश के और अपने मूल देश के विकास में प्रभावी योगदान दे रहे हैं।

मित्रो, सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में मामूली कमी आने के बावजूद वर्ष 2018-19 में भारत, विश्व की सबसे तेजी से विकसित हो रही बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है जबकि विश्व स्तर पर उत्पादन की वृद्धि दर 2017 में 3.8 प्रतिशत की तुलना में 2018 में 3.6 प्रतिशत रह गई। तथापि, अप्रवासी भारतीय इस वृद्धि दर को बढ़ावा देने में अपना बहुत योगदान दे सकते हैं। अप्रवासी भारतीयों की मुख्य पहचान विदेशी मुद्रा भेजने वाले व्यक्तियों के रूप में रही है लेकिन ये लोग व्यापार तथा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को बढ़ावा दे सकते हैं, व्यवसायों का सृजन तथा नई जानकारी और कौशल का हस्तांतरण भी कर सकते हैं। अप्रवासी भारतीय परोपकारी कार्यों के माध्यम से भी अनेक क्षेत्रों में अपना योगदान दे सकते हैं। सामाजिक कार्यकलापों के क्षेत्र में न केवल आर्थिक संसाधनों के माध्यम से योगदान दिया जा सकता है बल्कि समाज के समक्ष आ रही समस्याओं के संबंध में नए कौशल, नए विचार और नवीन दृष्टिकोण अपनाकर भी अपना योगदान दिया जा सकता है। ये व्यक्ति घरेलू स्टार्टअप को तकनीक और क्षेत्र विशेष से जुड़ी विशेषज्ञता का लाभ प्रदान कर सकते हैं और प्रायः एंजल इन्वैस्टर के रूप में कार्य करते हैं। विदेश में स्थित अप्रवासी भारतीय शिक्षक समुदाय, शिक्षा की गुणवत्ता और अन्य कार्यों में सुधार लाने के लिए भारतीय कैंपसों में शिक्षकों की सहायता करने के लिए समय और संसाधन देकर अपना योगदान दे सकते हैं।

भारत सरकार विदेशों में रह रहे भारतीय मूल के लोगों के भारत के साथ संबंधों को और अधिक मैत्रीपूर्ण बनाने के लिए प्रयास कर रही है और सरकार ने प्रवासी भारतीयों के लिए विभिन्न योजनाएं आरंभ करने के साथ-साथ अनेक कदम उठाए हैं जिनमें प्रवासी भारतीयों को भारत की नागरिकता देने संबंधी मामले, प्रवासी भारतीय दिवस, प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार, भारतीय मूल के लोगों और अनिवासी भारतीय छात्रों को भारत में स्कॉलरशिप और पर्यटन, मीडिया, युवा मामलों, शिक्षा और संस्कृति तथा अन्य क्षेत्रों में भारत के प्रवासी भारतीयों के साथ परस्पर संवाद और सौहार्दपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने के लिए नई पहलें किया जाना शामिल है।

भारत सरकार द्वारा पूरी दुनिया में सिख समुदाय के हितों से जुड़े मुद्दों का समाधान करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। इस वर्ष पूरा देश साथ मिलकर देश-विदेश में गुरु नानक देव जी की 550वीं जयंती का उत्सव मना रहा है। गुरु नानक देव जी की प्रेम, शांति और करुणा की शिक्षा की भावना के अनुरूप कार्य करते हुए भारत सरकार ने विदेश में रह रहे ऐसे कई सिख बंधुओं को काली सूची से हटा दिया है जो पहले भले ही गुमराह हो गए थे, किन्तु, अब फिर से उन्हें मुख्य धारा में शामिल किया जा रहा है। सरकार ने करतारपुर साहिब गलियारे तथा सुल्तानपुर लोधी के ऐतिहासिक शहर को विकसित किया है और गुरु नानक देव जी से जुड़े विभिन्न धार्मिक स्थानों तक की यात्रा करने के लिए तीर्थयात्रियों को सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से एक स्पेशल ट्रेन का परिचालन भी शुरू किया है। मुझे यह जानकर भी खुशी हुई है कि सिख धर्म की शिक्षाओं और दर्शन को बढ़ावा देने के लिए और इसे विश्व शांति तथा सौहार्द में भारत के विशिष्ट योगदान के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कनाडा के कॉनकॉर्डिया विश्वविद्यालय सहित अन्य कई विदेशी विश्वविद्यालयों में गुरु नानक देव पीठ स्थापित किए जाने का भी प्रस्ताव है। हम कॉनकॉर्डिया विश्वविद्यालय में पीठ स्थापित करने के लिए कनाडाई - भारतीय समुदाय को सक्रिय रूप से योगदान करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं इस शानदार समारोह का आयोजन करने और गर्मजोशी से हमारा स्वागत सत्कार करने के लिए भारत के कार्यवाहक उच्चायुक्त और काउंसल जनरल का एक बार फिर से धन्यवाद करता हूं। मैं इस समारोह में उपस्थित आप सभी लोगों का भी धन्यवाद करता हूं।

———